वीभस्तीय करनार

बुकसेलर सखाराम

भीकशेठ सुं[illegible]

छपाव्यामां

छगनलाल मगनलाले

पोताना रीणा प्रेसमां छ.

ठे० लहेर भाणाण हरगोविंद

पुरीवाजनी दुकानमां

संवत १९४० सने १८८४

२११९

भाग १ मो.

होरीसंग्रह.

होरी. १

सांवरा मत डारो पीचकारी ।। लगेंगी मात हु
मारी ।। सांवरा ।। टेक ।। मत डारो मरजाद सें
रहीयो ।। मैं कुंवारी कुमारी ।। तुम हो निरलज
मैं नहि जैसी ।। मुखसे देउंगी गारी ।। छने-
ती होयगी तुमारी ।। सांवरा मत डारो पीचकारी
।। जेसी होंस जो होवे मन में ।। परणो नौ त-
ारी ।। जिके पग लागो नरी ।।२।। मात कुण मैं कुंवा
कुंवारी ।।२।। हु तवपर मात हुमारी ।। सांवरा ।।
ना परनारी से पाव न पकरयो ।। मोहन मन
बिचारी ।। मात तात तोरे वृद्ध लजे हो ।।
नकसको नारी ।। कहुं तुम सेंजी सतारी ।। सां
वरा मत ना डारो ।। जागु पेकर जर मेरी मुंदरीयां
।। पनजेन सें मारी ।। खुरधास प्रेम जु भाष्य
डांडा जरघ जो ।। जाने मीरी प्रभु नारी ।। पी

होरीसंग्रह.

तांपर लीयो है उतारी।। सांवरा मतडर
गोपी प्यडडारी।।८।।

होरी. २

सांवरो हम्जु जे नहिं जायो।। द्रीगनन्छुना
नर लायो।। सांवरो परेशा प्रनप्रीनताकुसं
गछोरकेु।। मधुजन न्तर्छ जलायो।। दासीके
रीपटराणीन्न यडु।। गोपीनापडुना मल-
न्यो।। कुंपकुजन्तकुं मलायो।। सांवरो हम्जु
जे नहिं जायो।।१।। तलप्त छोरो प्रजमें
राधीकु।। कृष्णद्वारिकामें छायो।। कहा
हम सजनी सब दासी।। दासीको मीत भा
रायो।। गरलवा कुं घोर पीलायो।। सांवरो
जकुं नहीं जायो।।२।। क्रुरो रे अक्रुर कुं ले
जायो।। घरघर होरी नलायो।। जकस्तो हो
रीनलत छतीयनमें।। स्वपने सुपनपायो
।। हीरहेकहांले गगन जायो।। सांवरो जे
नकुं नहीं जायो।।३।। लीजलीप्रपतियांछ

तीयां जलत है॥ ऊधो कुबजी ही पठायो॥ ले
है पीरी पाती जपिर संतापे॥ कुबरीके मन भा
यो॥ धीरज नाहीं नतयनायो॥ सांवरे॥४
॥ जब हरही मेरो हरद नजान्यो॥ डामीके ज्ञे
रजनायो॥ सुरदास जजलाकी बीनती
॥ करत है मनको ल्लायो॥ नरे पर ख्रुण लग
यो॥ सांवरे जजहुं नहीं जायो॥५॥

होरी ३

सांवरे सें कहीयो मोरी॥ कहीयो मोरी सु-
नाईयो मोरी॥ सांवरे सें कहीयो मोरी॥ टेक॥
अंगन सें ऊधव जाजो॥ सुनके सब जी
सब होरी॥ कहे हमकुं नंदलाल मीला जो॥
नातो छियो जीजघोरी॥ करी कहा हमने
चोरी॥ सांवरे सें कहीयो मोरी॥१॥ बीती
न माऊं परत ग्रही लीन्ने॥ कुबजीन तीकर
ने रीी॥ जैसी मुझ कहां पेनी मोसें॥ प्रीत पी
छलीतोरी॥ सुरत नाहीं लीनी मोरी॥ सां

वरेसेंकहीयोमोरी॥२॥ भूषनवस्त्रसज
हीतनदीनो॥ खानपानजीसरोरी॥ वि
भूतीलगाई जेगनहोई जैडी॥ तेरोहीध्या
नधरोरी॥ जेगेपलीजाई थांडीसोरी॥ सां
वरेसेंकहीयोमोरी॥३॥ नीरादिनव्याकुलडो
रतराधिका॥ ग्रेहेविधातनधेरी॥ स्यामतु
मढुंढतकुंजनमें॥ रीशानराग्रहछोरी॥ मे
लोजहांहोरीहोरी॥ सांवरेसेंकहीयोमोरी॥
४॥ रोमरोमजीषछाईरह्योहै॥ मनमेंपर
परोरी॥ सुरस्यामउनसें जकहीयो॥ गो
डोंगीकीरतनतोरी॥ पापनांशीरहतरतोरी
॥ सांवरेसेंकहीयोमोरी॥५॥

होरी. ४

सांवरेसीजीजेगपठायो॥ नीपटनीम
रकहायो॥ सांवरेसीजी॥ टेक॥ ॥
अंगेविभूतगलेमृगछाला॥ सोधूनके
मनलायो॥ कुंजनढूंढानलगीहैजज

सुा॥ जेही मंत्र पढायो॥ प्रेमको नेन छोरा-
यो॥ सांवरे सीजी न्ने गपठायो॥१॥ दीन
दु द्योषकं कछु नाहिं न्ने॥ संगत गुन उपजन्यो
॥ कुब्जा न्हें कंस की दासी॥ वाको दुंथ कढायो
॥ दीनकुं लालन आयो॥ सांवरे सीजी न्ने
गपठायो॥२॥ जेकु दीन मोज्जे आर्ठ जत्थान
दा॥ केसर रंग छरकायो॥ नीलांबर पीतांबर
उपरा॥ तालतंबोलन छायो॥ मानु मघवा
न्नीलायो॥ सांवरे सीजी न्ने गपठायो॥३॥
वाहीनकी खुंधलूं लगई री॥ दोलनरने नल
रायो॥ दांहां करत कूरत हे लालना॥ जोहे
तरंग ले हेरी आयो॥ पफरफर नाम्य नचायो
॥ सांवरे सी जीन्ने गपठायो॥४॥ दुमीनकुंमेर
न्नयो अन मेरो॥ थीता पतुर पोवायो॥ मंज
न्नदास तज्जु प्रन वीनता॥ नर्छदारी दामें छ
बा॥ हीरीनां हि दरसन पायो॥ सांपरे सी
जी न्ने गपठायो॥५॥

होरी. ५

सांवरोनीकौबेनुबजावे ॥ बजावेबजावे
बजावे ॥ सांवरोनीकौबेनुबजावे ॥ टेक ॥
घरघरसे गोपी चली आवे ॥ सुन मोर
लीसुख पावे ॥ कोई सखी ताल मृदंग ब-
जावे ॥ कोई नाचे कोई गावे ॥ स्याम सलोने की ज
तिसुख पावे ॥ सांवरोनीकौबेनुबजावे ॥
॥ कोई सखी अबीर गुलाल उडावे ॥ कोई पी
चकारी चलावे ॥ कोई सखी अंतर मुख तक
रहे ॥ मनमोहनकुंरीझावे ॥ राधामहेश्रीमनो
हो बढावे ॥ सांवरोनीकौबेनुबजावे ॥ २ ॥
ब्रह्मा महेश्वर शारद सब मुनी ॥ कौतीक देखन
आवे ॥ नाचत अपछरा तनये मुदीत मन
तान में तान मिलावे ॥ स्याम हरी मोहे च
रावे ॥ सांवरोनीकौ ॥ ३ ॥ जयजयकार ल-
यो त्रिभुवन में ॥ कुंजली देव सुनावे ॥ सुख
नंदलाल चरनकमलको ॥ नीगम अजप अगुन

गावै॥ सारदासुषपावै॥ सांवरो नीकौ॥ ४

होरी ६

सांवरो रंगडार गयोरी॥ गयोरी गयोरी
गयोरी॥ सांवरो रंगडार गयोरी॥ टेक॥ ॥
में ठाढी अपने भुवनमें॥ ओढ़न कुसुम
सारी॥ ये ठाढो कुटम्बकी छईयां॥ हू पलीयो पी
चकारी॥ स्याम मोहू सनमुष डारी॥ सांव-
रो डारी॥ मुखपै हन जोर अरगजा॥ मृगम
दपी चकारी॥ तनकी भीचकारी भिजोरे स्याम सें
॥ मैं अलानकी छोरी॥ मानु घन दामकौ घे
री॥ सांवरो रंगडार गयोरी॥ २॥ सासुननुदी
मोरी ननुदी नाण दीयां॥ जीन जीन हेंगी गारी
॥ ये ह नगर के लोग चवडे जे॥ रूपकी आतहै
न्यारी॥ सबजी ऽरतागतनारी॥ सांवरो रंग
डार गयोरी॥ ३॥ लाल गुलाल घुमडही येहैं
पुनरसों जिड लेरी॥ रयाससबी [illegible] ब्रजकारु
ईनेरा जैसो ही कि गसी कौनी॥ लाल

तोरे मुख पर वारी॥ सांवरो रंग डार गयो री॥४॥

होरी ७

सांवरो मोकुं रंगमें बोरी॥ बोरी बोरी बोरी॥
सांवरे रंगारे डारा जहीयां पकर कर बीर गगरी
यां॥ छीनाय के बीर ढोरी॥ रंगमें रस जस
मोकुं दीनी॥ डारी गुलाल झोरी॥ गावन लागे
मुखसे होरी॥ सांवरे मोकुं रंगमें बोरी॥१॥
जायो जग्यानंद मील्यो मंदिर में॥ देखत न
चलकी बोरी॥ लरीलूंब मोकुं रे पकरी॥ जोबन
ने जलन्नेशी॥ माला मोतनकी तोरी॥ सांव
रो नारा तज मेरो न्नेरकु छुजे नयाल्यो॥
भ्रातकन सुनाछ॥ तज मे जनकुं नेंन दीभा
यो॥ मत न्नेनो मोकुं लोरी॥ जनकुं पीतकी
बोरी॥ सांवरो ना॥३॥ मरन्नहा मेरी कुछुजे
नरा भी॥ कुछु जे कीकुस तोरी॥ सुरदास प्र
भु तुमारे मीलनकुं॥ मोकुं रंगमें बोरी॥
गर्जेती में नंदकी पोरी॥ सांवरो ना॥४॥

होरी. ८

सांवरे पीचकारी डारी॥ सांवरे॥ टेक॥ ॥
सरस लाल लगती समुनासरठा॥ पेहेरी कसुं
भ ललसारी॥ जेहे होरी ठोठै कृष्णकी छैयां॥ १॥
धलीयो पीचकारी॥ लजी मोकुं मोहे परमा
री॥ सांवरे पी चकारी डारी॥ १॥ सासुनणं
दी घरनन दीहो बोलीर जीन सौन हेंगी गारी
॥ जेह नगरके लोकु यवर्छजे॥ उंधकी रीत है
न्यारी॥ मोकुं उरलागत लारी॥ सांवरे॥ २॥
छांहन नकीकुंन कालन में॥ मोहे लजे लहो
री॥ जेकुं तो ठाढो कृष्ण सांवरो॥ जेहे जोर
रांधे प्यारी॥ लजी हेमनहारी॥ सांवरे॥ ३॥
लेकर गुलाल मेरे मुखपर डारो॥ घना कंचुमन
में भी प्यारी॥ नवलघस मोहे जपरलालं
॥ जेसी भात भीजारी॥ लाल तोरे मुखपर
वारी॥ सांवरे पीचकारी डारी॥ ४॥

होरी. ९

सांवरो होरी खेलन आयो ।। आयो ।। सां
वरो० ।। टेक ।। ।। मेंहदी खेलन गई ती वृं-
दावन ।। मारग आडो पाऱ्यो ।। मही माट मे
री सब रे ढोलायो ।। मांजन लूटी खा
यो ।। जे बसो हाकुडो लयो ।। सांवरो हो
री खेलन आयो ।। १ ।। वृंदावन कुंज गल
न में ।। खेलत आरे मच्यायो ।। लाल गुलाल
अबीर उडायो ।। मुठी लरलर घायो ।।
सांवरे आहर छायो ।। सांवरो ।। २ ।। सब
सखीयां मील मोहन घेर्यो ।। रंग हेदरने
री आयो ।। सुर स्यामप्रभु तिहारे मीलनकुं
।। पिरनकमल चीत लायो ।। सखी मेने महा
सुख पायो ।। सांवरो ।। ३ ।।

होरी १०.

सांवरे रंग धूम मचाई ।। मचाई ।। सांवरे०
।। टेक ।। चुवा चुवा चंदन अबीर अरगजा
संग लीयो हे नुलाई ।। उरसुं उरकुं सनपीस

होरी॥ छीरकत ईत उत धाई॥ मनकुंकु-
अरलाई॥ सांवरे॥ १॥ अबीर वीरी॥ पलनछ
मलेजीत॥ गगन गती च्यजल सुहाई॥ सुंदर
ज्यदनकमल दल लोचना॥ जोले मंदमुसका-
ई॥ छजी जरनी नालई॥ सांवरे॥ २॥ ताल
मृदंग चंग डफ जालता॥ सुनगोपीसब जाई
॥ छीरकरंग रे॥ मेडेतनपैरा॥ जरसपैर सबीर
झाई॥ देह सुध सब जी सराई॥ सांवरे॥
३॥ ब्रह्मरूप मुनीपर विज्ञानी॥ जीरबकीर
तन ऊराई॥ मुक्तानंद स्याम सुंदर संग॥ प्री
त ज्ञजनकी छाई॥ मोह गज दीनो हे उराई॥
सांवरे॥ रंगधुम मचाई॥ ४॥

होरी. ११

स्याम छोडो जहीयां मोरी॥ रेनरेह गई
थोरी॥ स्याम छोडो॥ टेक॥ जप. नेज पनेमं
दीन रसेंनी कसीर जेउ स्याम कु गोरी॥
रहोरे स्याम तुम मोरे गुनाव. सेंनी॥ केसे

ऽ॥ अलनेरी॥ स्यांम छोडो जहियां मोरी॥ रेहेन देहु गई थोडी॥१॥ तीन पोहोरपीया तुमरसे लगी॥ रस रे पट नाल नेरी॥ जकुं स्याम तुम तर पत नांहीं॥ मेकुं नाथ ठगारी॥ स्याम छोडो जहियां मोरी॥ रेन रेहु गई थोरी॥२॥ आसुह हीली मोरी नणदी ठन गारी॥ दीयरीया की थोरी॥ छोडो पीया मेरे प्रातःलयो हे॥ पत ना रहेंगी तोरी॥ स्याम छोडो जहीयां मोरी॥ रेन रेहु गई थोरी॥३॥ कृं दावन में तुम मन्यी हे॥ जेलत राधा गोरी॥ सुर स्याम मल्हु तुमारे मीलन कुं॥ जरबकुं कुंके रननेरी॥ स्याम छोडो जहियां मोरी॥ रेन रेहु गई थोरी॥४॥

होरी-१२

सखीदानें हूं जेलने होरी॥ रघुनंदन जेले होरी॥ टेक॥ ऊतें नेमें से ऊन कुं सो आयत॥ ज्यों रतनरतन करें थी॥ ऊत कंगद हनुमान बी-

लीषना॥ लाल कीतान अयोरी॥ कहे मुअहो
रीहोरी॥ सषी आनंद भेजलहोरी॥ अबी
र गुलाल अरगजा कुमकुमा॥ केसर गागर
घोरी॥ नृत अंतर ल्युं अरअंग अंगअतपर
गडीउडन ढीरी॥ यमकु अपलान्युं गोरी॥
सषी आनंद भेजलेहोरी॥२॥ अबत द्वाल नृ
दंगपअलगानापल दे तारी॥ रंगभार पे
रीरउपरा॥ अयतके तनसारी॥ लरीपी
येझरी सारी॥ सषी आनंदा॥ उ॥ गगनवि
मान देवसब देषे॥ आनंद रंग अढोरी॥
आसबी देही अंडेही मनत्नायो॥ अपी अं
होयदलेरी॥ लु न्यधीली न्नेमोरी॥ सषी
नंदा॥४॥

होरी-१३

प्रीतम मेरो प्रान हरोरी॥ हरो री॥ प्रीतम॥
देखा॥ ल्युं मछली जल बिना न जुवे॥ अरो
रंगअन्योरी॥ तन अंतर अंत मेरो प्रान

अतहो॥ तुमकुं कछु नहीं थोरी॥ जुबन मो
हे अकु डरो री॥ प्रीतम मा री॥ केसर रंग अनस
पर डास्यो॥ रोम रोम रंग में बोरी॥ कहां अव
जअकछु जेन सुजे॥ अंतर आगन गोरी
॥ हीरी हीरी जोए तम्हीं बोरी॥ प्रीतम मेरो॥
२॥ सुरती आन पडी हे हरी॥ अजीया॥ तेरो
ही ध्यान धस्यो री॥ तुंही तुंही रहु नीसआ
सी॥ नइं एणे नीरतनो री॥ प्रेम कछुं हृदय परो
री॥ प्रीतम मेरो॥ ३॥ सुजके कारन संग छो
यो सबहीं॥ ऊलटो दुःख लयो री॥ संत दास
समन सात सह गुर हीं॥ कोई सा ने नमको न्यो
री॥ नेसो तलयो तेसो करो री॥ प्रीतम मेरो
प्रान करो री॥ ४॥

होरी १४

अटक्यो मेरो पीर मोरारी॥ मोरारी॥ अट
क्यो॥ टेक॥ नागर संग मेरे नीरपल नझी
पयुरीयां मनो नागरी सलवी॥ रे समपं धनु

अरे दुष्टो॥ अटगर्इ जोरकीनारी॥ भीज्योकौ
र्इजांको खेलाडी॥ अटक्यो मेरो चीरारी॥
अगरीपाडेराण संगकी साहेली॥ कृजी
नतीकरलेडी॥ जेसी नीजहर्इ सजीअ
नघु॥ माने नहिं अन मानी॥ श्रीनको असन
वोहारी॥ अटक्यो मेरो चीर मोरारी॥ २॥
श्रंघाजनकी कुंजगलन में॥ मोहन खेले
होरी॥ चंद सखी तन जान कृष्णछआ
परनकुसलतीहारी॥ जन राखो लाजह
मारी॥ अटक्यो मेरो चीर मोरारी॥३॥

होरी १५

फागनके से खेलुं होरी॥ होरी॥ फागनआ
इ॥ आयो फागन मास तरुणी नारे सब
दूलहन्यो॥ पिया बीना जसंततनावो
नेजन आग लगोरी॥ मोहे वीरहा अड
जोरी॥ फागनाके संग वीरी॥ ॥ कैरत नु
वीरपे सतख॥ जानीह रतनुहैयाकी

॥ मोतनुं लुंभ लटा सजत लहीणी॥ लै
पीआ आन लेरी ॥ना॥ तो मैं रे प्रान तलै
री॥ फागन ॥ केसे खेलुं होरी॥ रा॥ युं करते ह
री आजे अयानंदा॥ फागन में जखेल्यो री
॥ यंद सखी ललना ॥ कृष्ण छे आ॥ ग्यास
नरास रख्यो री॥ भख्यो रंग फागन होरी
॥ फागन ॥ केसे खेलुं होरी॥ ३

होरी १६

अलमें हरी होरी मचाई॥ मचाई॥ अ
लमें॥ टेक॥ ऊडत गुलाल लाल भये अ
हला॥ धुरत है पीचकारी॥ अंध जनकी कुं
ज गलन में॥ कुमकुम कीच मच्यो री॥
रा॥ म रांग खेलन आई॥ अलमें हरी हो
री मचाई॥ ॥ एत से आजे सुघर राधी
का॥ ऊत से कुंवर कन्हाई॥ खेलत फाग पर
सपर होलमीला॥ मैं सुख अरपये नन्द
॥ नंद घर अनंत अधा[illegible]॥ अलमें॥ ज

राधे सावनकुरी सखीयनकुं ॥ कुंजकुंजगृहधाई
॥ लपटजपटलीनो स्याम सुंदरकुं ॥ अरस
स पकरले जाई ॥ लालकुं तो नाच नचाई ॥
ब्रजमें हरिहोरी मचाई ॥ ३ ॥ मोरली पीतांब
र लीयो रे छीनाई ॥ सीरपर चुनरी ओढाई ॥
पींहीं लाल नेंनो अंजपकाजर ॥ नक वेसर पेहराय
ई ॥ मानु नवीनार बनाई ॥ ब्रजमे हरीहोरी
मचाई ॥ ४ ॥ सुनकृतहे मुख मोरहसतहे
॥ कहां रे गई चतुराई ॥ कहां रे गये बापि
ता तुमारे ॥ कहां रे जसोमती माई ॥ लेत बो
रतुमकुं छोडाई ॥ ब्रजमें हरीहोरी मचाई ॥ ५ ॥
॥ फगुवा लेउंगी जब जाने देउंगी ॥ कहीये हो
टी उपाई ॥ घेपुजाय कसर लज हीन कही ॥ तु
म हो थोर कन्हाई ॥ छोल दधी माखन खा
ई ॥ ब्रजमें हरी होरी मचाई ॥ ६ ॥ रासबिह
हर व्याहे बांहा जन ॥ ब्रिजजीवन ताकुं राधे
॥ राधे स्याम जोरी जुगलपर ॥ कुरबान

सबजग। प्रीत उर रहे न समाई। ब्रजमें
हरी होरी मचाई ।१६।

होरी ॥ १७

पकरे ब्रजजनगीरधारी ।। पकरे ।। टेर ।। आये
मंगलरी गोपी सखी जाई। खेल मच्यो है
भारी ।। खेंचली जे पीताम्बर मोरली ।। छां
छांडरत मोरारी ।। हसत लेकर तारी ।। पकरे
ब्रजजनगीरधारी ।।१।। ग्वालबाल सब
सबको। छीनलीयो ढुंढारी। कर ले पी
तांबर मांगे ।। हो मोरलीयां मोहीप जब
लई जल तुमारी ।। पकरे ब्रजजनगीरधारी
।।२।। ब्रह्म कुं नपत मुनी परची धीजनी ।। सब
लघा सना टारी ।। नारद शीष बडे पारन
पायो ।। ब्रह्मंकुं नपत त्रीपुरारी ।। ताकुं गोपी
हैचत गारी ।। पकरे ब्रजजनगीरधारी ।।३।।
दयबयकार लयो त्रिलोपन में कुंली है ब
नुनाणी ।। सुरकानंद लाग्य ब्रजजनकों

॥अजां अजहु पलक अली हारी॥ मथुरांनीं अ
नंदीनारी॥ पकरे अनंननगीरधारी॥८

होरी १८

पुछुं में जंननीके कुंवर सें॥ लंका केसी जला
ई॥टेक॥ लंकासा कोट समुंदरी खाई
॥राम लछमन दोनु भाई॥ वायुसुतने
प्राक्रम कीनो॥ कुदन जाके लंका मांही॥
पुछुं में जंननीके कुंवर सें॥ लंकाकेसी जला
ई॥१॥ सब रे लंकाको घृत मंगायो॥ ज
गवाके पुछ बंधायो॥ हीर चीर ले सब रे न
लायो॥ जेसो जनत रे देखायो॥ पुछुं में जं
ननीकुंवर से॥ लंकाकेसी जलाई॥२॥ राव
न मारे भीली षन पाये॥ राम जयो द्या
में जा पे॥ जानंद लये सो कुनगरके ई
श्वरने गुन गाये॥ पुछुं में जंननीके कुंवर
सें॥ लंकाकेसी जलाई॥३॥

होरी १९

हेओ रघुवर रंग उडावे ॥ जेसीकुंवरी लन
कृष्णडी लरलरलावे ॥ हेओ ॥ टेक ॥ हरषिमें
ओरीकूपटयाके हिलमें ॥ मुठीयां लरलर
उडाये ॥ जेसीकुंवरी नन्दकृष्णडी लरलरला
वे ॥ हेओ ॥ १ ॥ सीताराम लछमन लरथ
शत्रुघन ॥ लछमन चमर उडावे ॥ जेसीकुं
वरी नन्दकृष्णडी ॥ हेओ ॥ २ ॥ रीषसनकादी
क जोर ब्रह्मा हिं ॥ ३ ॥ शेष सहस्र मुख गावे ॥
जेसीकुंवरी नन्दकृष्णडी ॥ हेओ ॥ ३ ॥ जैठेब्र-
ह्मा जेहे पदतके ॥ मुनी नारद जेनु जलपे ॥
जेसीकुंवरी ॥ हेओ ॥ ४ ॥ दातेरी जयोध्यामें
हागम पीहो ॥ तुलसी मंगल गायो ॥ जेसी
कुंवरी नन्दकृष्णडी लरलरलावे ॥ हेओ ॥ ५ ॥

होरी २०

लीओ तलेवे पत्र ब्रजनारी ॥ लीओ तलेवे ॥ टेक ॥
स्वस्ति श्री गोकुल नगर द्वारीकां प्रीतम मेर
न ब्रजधारी ॥ लखवे गोपी मालायक सांचे ॥

श्रीकुंजबिहारी॥ भरनदमलजलीहारी॥८
लीजलेलेपत्रपुष्पजनारी॥१॥ गोकुलगामे
सेलीपत गुजरीयां॥ स्यामीकुं जिसतारी
॥ जकुंनाथ जगतकुं भुवना॥ आंखीयांकुं जि
हारी॥ मैं तो प्रभु दासी तीहारी॥ लीजल
रावाकुं कुंरास जेम जानुं दा तुम्हारे जा
नंदहारी॥ जलरे लोकनकी जतनकरायो
कुवारीकुं वसन चाली॥ हलासा जकुलमोर
री॥ लीजलेले पत्रपुष्पीजनारी॥३॥ जप
रंगअंजेक जरब प्रभु जेसी॥ लेने कुं ह्यनि
भारी॥ नंदरलरी दाकूं अलयेहें॥ जानमी
ली जेकुं वारी॥ जेरमत करीये लणारी॥ ली
जलेले पत्रपुष्पजनारी॥४॥ मा आवत केंकुंजा
जजगतहें॥ घरमें दासीयारी॥ लीजाले
हमी बातपा कुंसा टेरेगाटरी॥ पीडा मन
जानो मोनारी॥ लीजलेले पत्रपुष्पजनारी
॥५॥ आतसोगन भायानंद सायदे॥ लज

नेसंगजारीहो॥ हुं महेणीओनजीलाग्यही
॥ गीतमळीपटरानी॥ कुंवरीजमएगाणीसोली
मलेकेपदरमनलारीहो॥५॥ गहलीपिडिह्नप
कुंदिनो॥ जां पीयो वीधीसानी॥ म्न॥ म
भलुभुगतजनछे॥३॥ गहनकुलेजिलारी॥
बेसीपुथ्थीहोतहम्मारी॥ लीजलेकेपदरम
नलारीहो॥६॥

होरी २१

तरीया हरलायो जी रानी॥ जेले रमेवेकुंप
गुमानी॥ तरीया॥ रेशावाडीजनकीतुम
हरलाओ॥ ताही जगम मैने जनी॥ पे
जरते हे जगम जां घेरा तेरी केयगीलडां
नीरानी॥ जेसो मेरो कुंप गुमानी॥ तरी
या॥ टीरा॥ ऊहत मंदीरी सुनो पियारायन
॥ छोडीयो जानिमानी॥ रामलछुमन
नरपे रघुपना साहेर पाग पजंघानी॥
जेसो मेरो कुंप गुमानी॥ तरीया हरलाय

जोजाजेरीछजांहर होनुं॥ चेत चेत अ
लिमानी॥ ननकी हर पायपडो तुमा कु
र्डस्वीघूलघानी॥ जेसो मेरो कृष्ण गुमा-
नी॥ तरीया०॥३॥ नुघलयो रावनकु मारचो
॥ हार गयो अलिमानी॥ सुरस्याम प्रभु
तुमारे भिजनकु॥ सीताकी पीर ननी॥ जे-
सो मेरो कृष्ण गुमानी॥ तरीया०॥४॥

होरी-२२

(गोवाल जोरनी स्त्री जरब करे छे.)

गोवाले संग खेलत होरी॥ होरी॥ तमाकु कोई
न मारी॥ गोवाले संग०॥टेक॥ लंगर धुतारी नी
ले घुमाडी॥ जेठी सो दन बाकी होरी॥ साकी जे
ठ बीडारन सनकु॥ ओ पनीय सप ननेरी॥
नगत सजनी घर करो री॥ गोवाले संग खेलत०
॥ गोवाल जोरनी ठोरकी नारी॥ जरब करे कर
नेरी॥ साड़ी में साडी सब फार गयो॥ अन-
मतो अमीहे पोरी॥ महीय रजमें लागेती

होरी॥ गांनेंसंग०॥२॥ आंजमें लोरी अर
न गणें जी॥ बेलीअलत जघोरी॥ मानां छे
पीकरे सजकां संग॥ नयनील लूत जन्यो
पी॥ गांने लेगज अकरो री॥ गांनेसंग॥ उप
नांग अशिम सुरापान सजअकुछा॥ इसकरो
योरी योरी॥ गांनेकु घरमें मतजाई जो॥ छे
सकोअगतमें योरी॥ मानोदेती अई तनीक
मारी॥ गांनेंसंग०॥ ४॥ हे धनवंतरी ध्य
मंपरनकु॥ नेंगी पीजेकर लेरी॥ आरपी
में पाड़ी अकुलेअयगी॥ जमरगली मेंजो
री॥ जातपड दैसी सो जी॥ गांनेसंग॥ पं

होरी० २३

मोहे सांपरेने गारी दई॥ दई रे रे दई मेंने
कछुना कही॥ मोहे पटकां॥ ईत मधुरां ईत गो
कुलनगरी॥ निपमें नमुवाचकही॥ आपतो
लैयांपार उतरगयो॥ में तो तकती तकती
रहीरे॥ दई मैंने कछुना कही॥ मोहे सांवरे

गारीदईछीा।। होऊंपडुंतोपफगाननयो। होह
राहेअडरीा। मनकीदईयांकछुहेदनराकत
फुा। मोरे मनकी मनमांरहीरे।। दईमेनेकछु
नाकहीा। मोहे सांपनेने गारीदईछो।२।।

होरी २४

आंके मिरजनने धूम मचाईछे।। जानजनम
रोवरसें खेलेगी होरी।। आंके।। टेक।। लीय
लीय पतीयांकुनेंझुलेजन।। सुनो अरे सींघी
याजाईछे।। हम जने हरे तो कसम नजीके।।
तुमकु रामदुवाईछे।। जानें समरोरसे जा
ईा। आंके।।१।। ढालढपरके तान लाजाके
।।तो पनकी पीचकारी।। रंगगुलालतलवा
रचलतहो।। तुमकु मजवछीलगईछे।। आह
कुरीअवलंतरचाईछे।। आंकुमीरजनने।।२।।

होरी २५

जा जचवर नाहिं आवेहेरी मेरी।। टेक।। जे
कान्हेकी हाउ जंगनमें।। जबमें जाउंकुहे

रीः॥ यलो नपी सजनी लक्ष्मन् ०जो॥ नी-
नेजा॥ कुंघरी॥ मजो कुमनंगमजमेरी॥
जा॥ अवसर नहीं जावेहूरी॥ ॥ पीनपे-
पीनन्यलो पकरी॥ हमसज रोकेंगेसे
री॥ जज अवकाल न्यो आनेको॥ हपि
न जावेंगेकेरी॥ सपासज आयेंगेतेरी॥
जा॥ अवसर नहीं जावेंरी॥ २॥ होन
नीपानो नेरावर ०वना॥ गोलीयुं घा
गोरी॥ जेकेहे लाल मैंलल्या॥ जाय
मीलीजोहोतेरी॥ लनहीं तोपे हमारी
॥ जा अवसर नहीं जावेंरी॥ ३॥ भा
न जायोहेहपिमें अपना॥ पायो वसंती
पेहरी॥ नो मानंद कहे नमन पावो॥ गु
नीपो रुपी पीतहेरी॥ रुपी घरकें मांहे
घेरी॥ जा॥ अवसर नहीं जावेंरी॥ ४

होरी. २५

मोहन मोसे खेलो होरी॥ होरी॥ टेका॥

रगहेजरही तुमारो॥ नेंसें चंद्र चकोरी॥ जसंत
ऋतु भीतीजनतें॥ जैंधनहोंस पुरोरी॥ मानो
मनकुं नीजगोरी॥ मोहन मोसे षेलो होरी॥ १॥
तेरे संग रमनेकुं लीयेकुं॥ पेहेरी मेंनवरंग चोरी
॥ मोहन तुम मेरे पग गरो॥ रंगकी गागर ढोरी॥
हीरवी गुलालजी झोरी॥ मोहन मोसे षेलो हो-
री॥ २॥ सघरो ब्रजंगत तेरो रो॥ मै सुंदरवरा॥ म
मैं चंदन चोरी॥ और लुनने लीडी मोकुं छ
वो॥ कहु तुमकुं कहने री॥ नती मेरी यह चो
री॥ मोहन मोसे षेलो होरी॥ ३॥ रगुना
रगुनाकु जहले में तुमकुं रंगुगी नाहि छोतो जे
जनेरी॥ ब्रमानंद कहे तुम जीतोगें॥ हमकुं
रषुं मोकुं तोरी॥ हाहा करूं मैं पामो री॥ मोह
न मोसे षेलो होरी॥ ४॥

होरी. २७

श्रीजमें हरी षेलत होरी॥ एहो री पटे डाजेल
बोजा जेकुंवरी राधीका॥ रंगजले चालन

होरी॥ ऊँतजलशाल सजासंगलेजाके-
सरगागर घोरी॥ परस्पर खेल मच्योरी
॥ब्रजमें हरी खेलत होरी॥१॥ जीउतगुला
ल अबूगलपो अबरा॥ रंगअनरसे पु
जोरी॥ उीमंग लरीगोपी रंगउारतारा
म सुंदरपरहोरी॥२॥ खेली श्रीनाथ लनेरी॥
श्रीजमें होरी खेलत होरी॥३॥ मोहनपिचु
कीतनजर्गो॥ अपुत्तानकीरोरी॥ प्रेममस्त
तनकीबुधभूली॥ रोत्लीत मानुं पकोरी॥
रही जेक परहूगलेरी॥ ब्रजमें हरी खेलत
होरी॥३॥ नेसोहू खेलमें पतुरसांवरो॥
तेसीही राधीकागोरी॥ मुक्तानंद मगनछ
बीनीरखेलत॥ कृष्णचरनुं मतियोरी॥रही
उनसंग रती मोरी॥ ब्रजमें होरी खेलतो

होरी २९

(को मल्हार रैफ सरनम दोउ) नकतालपी
अंधोलेटनीहोलीरा ॥ अबहोरीडीए

चनाललारी॥ ७ ॥ ओ सरनाईट अहा जुराहो
रीझीजटेका॥ सुधारे पंचम ओर अरगजा॥
अबिर गुलाल मिलाई॥ अतर गुलाब कुम
कुम केसर॥ पीचकारन मारी॥ लील गई मी
नजर सारी॥ होरीकी रचनाललारी॥ १॥
अतर मो है पर रोरान नाम कीया॥ कुंवर कन्
पर वारी॥ कनक पाल हीरा मोती अन लाई
॥ आनंद से ले धाई॥ सब ही लल ओप-
लिहारी॥ होरीकी रचना लारी॥ २॥ आपकी
अलकें अनयाहे रंग॥ अलक गाये नाम घ
री॥ इय मन नाम कीयो तु ने जग में॥ ओर जन
सब लालारी॥ रहे लयगी ये ही या ह गारी॥ हो
रीकी रचना ललारी॥ ३॥ पाकु नजर ओर करम
पर मसो॥ साजे तक रम है तेरी॥ ये हीने जीते
री जग में अजको॥ पंद्र ज्योत तारी (७) यारी॥ जे
बीते री गुल है न्यारी॥ होरीकी रचनाल्ला
री॥ ४॥ तन मन धन से तुं के वारकरत है॥ हल

घन नीरुयलारी॥ लोकु अनापगरी अको घन
ता॥ सा है जनाम की आरी॥ सहते जे
लक्षी प्यारी॥ होरीकी॥ पा शुलघरी शुल
लन मुखमें॥ कुंहरनरलनपाठा॥ धलला
ग प सुला ग प पुत्रको॥ सज परमाया है ती हरी
॥ घरो घन लयन यकारी॥ आल्हे होरीकी०॥ दु
सुरछत्र तुंसदासही जो॥ जोरसलामत स
जआडी॥ आलगोपाल तेरी अनुगो अनुगल
जो॥ जेसी जीनती हुमारी॥ शर मर जेमो
लातु मारी॥ आल्हे होरीकी०॥ ७॥

होरी २९

तेरी रूपना है रहे गठलारी॥ धन्य धन्य प
रोनेट अहा दुर॥ तेरी॥ रहा अमूल्य ठा घो
गपी पकडली जनाठा॥ की रहती की है सर लक्ष्यो
रे॥ कामधरमको गुलाब ठाड्यो॥ पुण्य कौ
गलयौरी॥ लीं लगा ठलगत सारी॥ तेरी
रूपना॥ पिअजापढी जलसे जलयाकें

३॥ अलख गावे नामधारी॥ कायम नानकी चो
हे जगमें॥ जो रकाम सबन तारी॥ रेहगर्छले
रीये हयाहगारी॥ तेरी रचना अपारा॥ कछु नही
जेहलेहन्तीकी॥ कां पुरषकां नारी॥ जेपी
नेही लवे सोर्ठ कछु पावे॥ सबको महेमा
तारी॥ जे सो तुं पर उपकारी॥ तेरी०॥ ३॥
तनमन धन सें सेवा कीनी॥ ऊर नाम नामकी
यारी॥ रंकु अनाथ गरीब को दाता॥ दयाद
न बनतारी॥ हो रही जय जयकारी॥ तेरी०॥ ४
कुल धरी कुल जगन मूहूरतमें॥ सुंदर जनम
लीयारी॥ धन्य धन्य भाग्य कुंजको॥ सजकी
बीपततें टारी॥ दीयो दरस्त बीकारी॥ तेरी०॥
५॥ पापकुं नजर नेम धरमकी॥ पुरन लक्किती हु
री॥ येही नेही तेरी जगमें जलकारही॥ देवीज
नवीकु जारी॥ बैकुंठमें जनत है तारी॥ तेरी
॥६॥ जे सो कुरनर सुन्यो न देखो॥ पुरन
नर अवतारी॥ हीरत तेरी कुं जलक॥ अलकुं॥

लर्छरसनाजेंथारी॥ लेजनीकुंहै मेंहारी॥
तेरी०॥७॥ पीरंनकुँवीरहोतीनोत्लार्छारवे
त्नामानरव्योनी॥जपनेपीताकीसेवाकरसे॥
नगमेंनस्लीयोरी॥ कुंजसजदीजेदीयोरी
॥तेरीरचना॥८॥चतुरसुजनननेहनामकु
रीहो॥ सुंदरछजपेरथारी॥ सजसुकीलमी
जपाहकरतहे॥ तेकुपालसगे प्यारी॥ लीन
ताकेतोरीन्यारी॥ तेरीरचना॥९॥ग्रीष्मरीतब
मेंकुंवरोहूपमहे॥ प्रकारीलयोजतिलारी
॥ जमीरगीमरावसजभीलनगीभगसे॥
ग्रथाननेगीतसवकीयोरी॥ मानसजमीदे
दीयोरी॥ तेरीरचना॥१०॥ राजमेंहेलमेंघुमन
थ्योहै॥ मकिमामीलनकीतैयारी॥ प्रेमकीलेथ
लर्छरानीयांगुं॥ चेलकंभजारोनेरंगीप्यारी॥ कुरथ
रहेकुरालताजिप्यारी॥ तेरीरचना॥११॥ जग
मगलेसनगलपवनोबाजा॥ रोषानलार्छजोक्ने
री॥ पुत्रघोडीअलुगोकुगकयो॥ जोकीहैपी

सतीद मारी॥ रास्मरजे भोला तुमारी॥ तेथ
रचना रेह गई त्यारी॥५२॥

होरी. ३०

(आवंदना वियोगथीथेली होरी)

नणदीके मनाथन आव्या॥ न आव्या॥ नण
दीनाटे काल्लेने जेणे परदेश मांनर्छेनी॥ लुं
लमावन मायया॥ नरीजे हरी घर सामुं नले
पुंडरीग रहेथा में हाव्या॥ हागळ जे हलाले
लेन्याव्या॥ नणदीके मनाथन आव्या॥५॥ पु
णीने तुरत गया परदेशा॥ रवो संगाथ स्थीथ
व्या॥ मारुं कहयुं करयुं जेन मान्युं॥ ठरोठतेरेअ
रठाव्या॥र॥ घानहिं मारा रोकाव्या॥ नणदीबा
रा तुरजापी नवानावमां व्यावो॥ व्वानवा
लारत्तराव्या॥ जेवेसमे छांटा आ सुना॥ मा
रीआंजेपी फूजजराव्या॥३॥ व्ययजर मास
हराव्या॥ नणदीना ठुपरे॥ रसमजाणी
भूमीतडरी॥ डीरविश्वास णाव्या॥ नव

अवथेनलपंथेअचान्याााअगणितगुणवे
गणाव्याााललालेलालेहवणाव्याानणहे
ाछााअकुअकुंअंबरअंबरनछेनाा मूलथीमा
लमंगाव्याााला लेमच्योलेथीलोलीयाथ
छेनाा लोलपोलेलगाव्यााालोलेसमता
रतलगाव्याााजणए धोनाापाव्यारलेतांहरतपव
सवित्यांपणाालाले फांछेनाालवव्याााले प
वलेरतोलयछे वलदीानाहिंराणाज्यारस्व
व्याा ललानहिंवेरालवव्याााणहीवा
डाामुहताहिवाणीनााहिवसनीदीधीााव्याय
हातोतेवटाव्याााकूरीअवधवधीकागणनी
लणीाा जेपणाहिवसतोजाव्याााहरेफूर्व
जेनछिंऊपलव्याााानाणहीाडाारंगनमेहो
जी मर्णाले साहेलीाादेखुडेरंगरव्याव्याापेय
ल्योलेप्य पेरस्पर्छांटोामनोहरजेवम
याव्याााव दीवांटाातालमृदंगविलाङ्
जालोाबाग दिम्पवाव्याााचीरहुपीने

तोविरीषबघेहुंजा। यिधनारेपेरेपे।ब्याउ्य
णालोहना।थेवरा।ब्यााानणहीणाणा।थेपा
थेंमेलीनेगुलाजपोहरा।। कुलडे कूलीकूला-
ब्याा।लोणचीनेमोर्ठजेमुकलरपीरने।।लप
नकूरलूला।ब्याा। डांतोरहेयाकजूजा।ब्या
।।नणहीणा।रणा।हहा।।वसंतकुतुनालेहुर
लत।।गा।कूलपिर्ठनेगुमा।ब्याा।डांतोकेर्ठ
जेमारा।जवगुणा।कुही कहीय मुकलरपीरल
मा।ब्याा।डोणेजेवी. जकुलकुमा।ब्याा।नणही
।।।।।कुरमहिया।लरनां नजांनणधीा।पीरमं
जंगारांधीझ।ब्याा।ःहलपतरामनाहेवनेकहुंमुं
।पीपुथीपीयोगर.या।ब्यवा। जेवालेजलवंजा
ब्याा।नणहीणा ररप

होरी. ३१

पा लागे कुरलेनीन श्याम हेजेलोन
होरीा पालागे।।टेक।।गौब पराबन मैं नि
कलीकुंप लाकुनापहिंपे ।।सघरीसुंप

रीयारंगमेंनलींनबोा छतनीसुनोजात
मोरीा स्याममोसे खेलोनहोरीा टाछीक
पटहापिसें गागराा न्हेरसेंजहीयांमरोरीा
घीलघरकतहे सासनयनतहो हकुंपतहेमो
रीा स्याममोसे खेलोनहोरीा २ा जनी
लगुलाल लपटगयोमुखमेंा सारीरंगमेंबो
रीा सासहनरनगारीहिंगीा जालमकुत
नछोरीा स्याममोसे खेलोनहोरीा ३ा हुग
खेलके तुमनेरे मोहनाा डाहागतकीनीमो
रीां सखीयनमें धीरताछके जागो होयकुं
थोरी थोरीा स्याममोसे खेलोनहोरीा ४ा

होरी ३२

कानाकुं समझयतनकोछोा रंगीयांरंगमें
लीन्हैछोा मेरीअंगनमें पतखोछोा कानाकुंा
टेकाा जब मीहमघरमें न्हो प्रीतमीन
नकोलोछो .नीरगुलालछीडयनभान
ामोहोहमांहु बोसे पोछोाजनरनगारीमें

मीलोठा॥ कानाकुं॥ रागरवाल गाउं योगे
राय के मेहेशा॥ मोहोपकडा नजरोठा॥ ठंनत
सीनीगारी हिनी॥ २ मकुन्न नकुं अोठा॥ स-
भीनीषे आयके सोठा॥ कानकुंआ॥ रा॥ नै॰ जै॰
श्रीलै लोकुन में॥ कुंजनीकुंजीस अोठा॥ चा
नेअजर गीस्ता॥ हनेपा ठा॥ घर दपीसेहम
अोठा॥ नीकलकर नेगनछोठा॥ कानाकुं॥ ३२

होरी. ३३

(आत्मज्ञान विषे.)

अनुराग जसंती आयो॥ नीनननापिसेनेह
हायो॥ अनुराग॥ टेक॥ तरुवर सजल वे
लपवल्लव॥ सुगंध सुमन अरषायो॥ वीके
कमल अकुरंग॥ रंग के॥ मुनी मन नंदन पायो
॥ अमरती हांगठे लोत्नायो॥ अनुराग॥
१॥ कमीलखोदकरवान मंजीता॥ सो
मेरे मन लायो॥ अोरलकर नअनुध्य सुध
॥ हेसगुल्ल गुररहसायो॥ यावे प्रेमल गाल

योा। हनुमानगा।वोा।स्रकुलसरूपुजनकुंजीतो
।।अजनहृदयघटजलयो।। ध्यानधूपसुवीयास
आरतीा।सानकोदीपजगायोा। अनहदनं
घिरत्नगायोा। हनुमानगा।ऊारविरागंगतवस्त
स प्रेमकुं ऊं।।तामकोत्तोगधरायोा।। अन
छोटमस्तुतिअयनजां यीडोा।अकडारतन
रीगायोा।। सदासुख सेहजेपायोा।। थीनु
रामनसंती जायोा।।७।।

होरी ३४

ऐसी होरी खिलाई।। श्याम मोकुं बोरीन-
अरे।।टेर।। ऐसी।।टेक।। ऐसलतके हगीरीन
नहीं।।दीने मेंदीगें रचूबाई।।दृगंभिजरज
रीयांजी मेहेजुंदे।। अज नर्ठ होपार्ठावा
सनोकुं ये रीयहाई।। ऐसी होरी फेरजै

होरी ३५

झूमनेहीत ।रामलनीरी अपनो पीयके
मा लोठ की ।।तेद्रा भीरणी कींभीकाठे

तीजी रंगीली॥ जोर रंगीली होली॥ आज
पीरी॥॥ औरकछु मांगे तो सजरे रंगी
॥ कुंथ पहियो ना॥ नया॥ सजीरीर अपनेघ

होरी-३५ २

आंगन खेलत फागरे॥ सखी सांवरीयो मो
रे आंगन॥ टेक॥ हमारी सुंदरीयां रंग मैं
लीनी॥ अपनी अप्यारतपा घरे॥ सखी
सांवरीयो मोरे आंगन खेलत फाग॰ पा॰

होरी-३६

होरी खेलरहे स्याम कुंजन में॥ मैं तो ढुंढरहीरी म
धुवन में॥ होरी॥ टेक॥ जे सालन॰ ललाके
भीरी॥ नै पीया आये फाग॰ [illegible] होरी खेल
॥ गोकुल ढुंढी अंबघन॰ [illegible] ढुंढीरी म
धुवन मों॥ होरी खेल रहे [illegible] जन में॥ दर॥

मरेक मुंदर मोरि यादी रंगार्जा
[illegible] .गारदे॥ फूमल

री सुंदरीयां पीयाकी पगरियां ॥ होनु अलबल
के रंग होरा लाला वाकी ॥ १ ॥ हमारे साजु के पां
य नूपैजे ॥ पीयाकी पीयासे समझ लो ॥
रंगके सुंदर मोरी रंग होरा ॥ २ ॥

होरी ३९

आपनन में होरी खेले कामनी ॥ मांपेती लकुच
के हमके कामनी ॥ आपनीन में गाटे कुछ ॥ ओ लके
पीयापर हेरे रंग मनकी बो ॥ कोन हेरा लगे छा
य छावनी ॥ मांपेती लकुचा के हमके कामनी ॥
आपनीन में होरी खेले कामनी ॥ १ ॥

होरी ४०

मेरी [illegible] जां [illegible] सांवरा अटके ॥ ओज यरा लटके
नेना हटे [illegible] ॥ मोरी जां जुमें सांवरा अ
टके ॥ टेक ॥ [illegible] नी रंगरे सांवरा ॥ मो
री छतीयन [illegible] ॥ ओज यरा लटके ने
नाहटके ॥ मो [illegible] सांवरो अटके ॥
छीं